प्रातः क्लास 17-10-68 ओमशान्ति पितामही शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। बच्चे अभी यहां बैठे क्या कर रहे हैं। चलते-फिरते अथवा बैठे2 जन्म-जन्मान्तर के जो पाप सिर पर है उन पापों की याद की यात्रा से विनाश करते हैं। यह तो अक्सर जानते हम जितना बाप को याद करेंगे उतना पाप कटते जायेंगे। बाप ने तो अच्छी रीत समझाया है। भल यहां बैठे हैं तो भी जो श्रीमत पर चलने वाले हैं उनको तो बाप की राय अच्छी ही लगेगा। बेहद के बाप की राय मिलती है बेहद पवित्र बनना है। तुम यहां आते ही हो बेहद के पवित्र बनने लिये। सो तो बनेंगे याद की यात्रा से। कई तो बिल्कुल याद कर नहीं सकते हैं। कई समझते हैं हम याद की यात्रा से अपना पाप काट रहे हैं गोया अपना कल्याण कर रहे हैं। बाहर वाले तो इन बातों को जानते ही नहीं। तुमको ही बाप मिला है। तुम रहते ही हो बाप के पास। जानते हो अभी हम ईश्वरीय सन्तान बने हैं। आगे आसुरी सन्तान थे। अभी हमारा सम्बन्ध ईश्वरीय सन्तानों से है। गायन भी है ना संग तरे कुसंग बोरे। बच्चों को घड़ी2 भूल यह भूल जाता है कि हम ईश्वरीय सन्तान है तो हमको ईश्वरीय मत पर ही चलना है। न कि अपने मत पर। मन मत मनुष्य मत को कहा जाता है। मनुष्य मत आसुरी ही होती है। जो बच्चे अपना कल्याण चाहते हैं वह बाप को अच्छी रीत याद करते रहते हैं सतोप्रधान बनने लिये। सतोप्रधान की महिमा भी होती है। बराबर जानते हैं हम स्वर्ग के मालिक बनते हैं। नम्बरवार। जितना2 मत पर चलते हैं उतना ही ऊच्च पद पाते हैं। जितना अपने मत पर चलते हैं तो पद भ्रष्ट हो जायेगा। अपना कल्याण करने लिये बाप की डायरेक्शन तो मिलती रहती है। बाप ने समझाया है यह भी पुरुषार्थी है। यह जितना याद करते हैं तो इनके भी पाप कटते हैं। याद की यात्रा बिगर तो पवित्र बन न सकेंगे। उठते-बैठते चलते-फिरते यही धंधा रहता है। तुम बच्चों को कितने वर्षों से शिक्षा मिलती है तो भी समझते हैं हम बहुत दूर हैं। इतना बाप को याद नहीं करते हैं। सतोप्रधान बनने में तो बहुत ही टाईम लग जाता है। इसी बीच में शरीर छूट जाये तो कल्प-कल्पान्तर के लिये कम पद हो जायेगा। ईश्वर का बने हैं तो उनसे पूरा वरसा लेने पुरुषार्थ करना चाहिए। बुद्धि एक तरफ ही रहनी चाहिए। तुमको अभी श्रीमत मिलती है। वह तो ऊच्च ते ऊच्च भगवान। उनको मत पर न चलेंगे तो बहुत धोखा खायेंगे। चलते हैं वा नहीं वह तो तुम जानो और शिव बाबा जाने। तुमको पुरुषार्थ कराने वाला वह शिव बाबा है। मनुष्य सभी पुरुषार्थ करते हैं। यह भी देखना है। इनको शिव बाबा पुरुषार्थ कराते हैं। बच्चों को ही पुरुषार्थ करना है तो जन्म-जन्मान्तर के पाप कट जाये। यह पुरुषार्थ फिर औरों को भी कराना है। मूल बात है ही पतितों को पावन बनाने की। ऐसे दुनिया में तो पावन बहुत होते हैं। सन्यासी भी पवित्र रहते हैं। वह तो एक जन्म लिये पावन बनते हैं। ऐसे बहुत हैं जो इस जन्म में बाल-ब्रह्मचारी रहते हैं। वह कोई दुनिया की मदद नहीं दे सकते पवित्रता की। मदद तब हो जब कि पावन बन और दुनिया को भी पावन बनावें श्रीमत पर। अभी तुमको श्रीमत मिल रही है। जन्म जन्मान्तर तो तुम आसुरी मत पर चले हो। अभी तुम सुख जानते हो सुखधाम की स्थापना हो रही है। जितना हम श्रीमत पर पुरुषार्थ करेंगे उतना ही ऊच्च पद पावेंगे। ब्रह्मा की मत नहीं है। यह तो पुरुषार्थी है। इतना ऊच्च इनका पुरुषार्थ होगा तब ल०ना० बनते हैं। तुम बच्चों को भी फालो करना है, श्रीमत पर चलना पड़े। मन मत पर नहीं। अपनी आत्मा ही ज्योत जगाना है। अभी दीपावली आती है। सतयुग में दीपावली होती नहीं। सिर्फ कारोनेशन होता है। बाकी आत्मा तो सतोप्रधान बन जाती है ना। यह जो दीपमाला बनाते हैं वह है झूठी। बाकर के दीप जलाते हैं। वहां तो घर2 में दीवा जगी रहती है। अर्थात सभी की आत्मा सतोप्रधान रहती है। 2। जन्मों के लिये ज्ञान-घृत पड़ जाता है। फिर आते2 कम होते2 ताकि इस समयआकर ज्योत बुझी हुई है सारी दुनिया की। इसमें भी खास भारत आम दुनिया। अभी पापात्मायें तो सभी हैं। सभी को क्यामत का समय है। सभी को हिसाब किताब चुकुत करना है। अभी तुम बच्चों को पुरुषार्थ करना है हम ऊच्च ते ऊच्च पद पावें, श्रीमत पर चलने से ही पावेंगे ना। रावण राज्य तो शिव बाबा की बहुत अवज्ञा की है अभी भी उनकी फरमान पर नहीं चलेंगे तो बहुत ही धोखा खावेंगे।

धोखा

17-10-68

ईश्वर की कब अवज्ञा नहीं=~~करनी~~ करनी होती है। रावण के मत पर अवज्ञा कर तो दुर्गति को पाया है। अभी जब कि बाप के बने हो तो अब अवज्ञा न करनी चाहिए। ब्रह्मा को तो बहुत ही अवज्ञा करते रहते हैं। शिव-बाबा की तो न करनी चाहिए ना। यह फिर भी मनुष्य है। पुरुषार्थी है। इनकी भल अवज्ञा करो। शिव बाबा की श्रीमत पर न चलेंगे तो बहुत धोखा खावेंगे। उनको ही बुलाया है ना कि आकर हमको पावन बनाओ। तो अब अपना कल्याण करने लिये शिव बाबा के मत पर चलना पड़े। नहीं तो बहुत अकल्याण हो जावेगा। मीठे2 बच्चे यह भी जानते हो शिव बाबा को याद बिगर हम सम्पूर्ण पावन बन नहीं सकते। तुमको 30वर्ष हुयेहैं तो भी फर्क देखो कितना है। पुरानी बच्चियां इतनी याद की यात्रा में नहीं रहती है जितना की नई रहती हैं। इसलिये फिर ज्ञान की धारणा भी नहीं होती। सोने को वर्तन में ही धारण होंगे। नये2 बच्चे कितने सर्विस एक्युल बन जाते हैं। कैसे2 अच्छे2 शिव बाबा के लाडले बच्चे आते हैं। कितनी सर्विस करते हैं। जैसे कि शिव बाबा के पिछाड़ी आत्मा को कुर्बान कर दिया है। कुर्बान करने से फिर सर्विस भी कितनी करते हैं। कितने प्रिये मीठे लगते हैं। बाप को मदद करते ही हैं याद की यात्रा में रहने से। बाप कहते हैं मुझे याद करो तो तुम पावन बनेंगे। बुलाया ही इसलिये है कि बाबा आकर विश्व को पावन बनाओ। तो अभी बाप कहते हैं मुझे याद करते रहो। देह के सभी सम्बन्धों को त्याग करना है। मित्र-सम्बन्धी आदि कोई भी याद न रहे सिवाय एक बाप के। तब ही उच्च पद पा सकेंगे। याद न करेंगे तो उच्च पद भी नहीं पा सकेंगे। यह तो बाप और दादा समझ सकते हैं। तुम बच्चे भी जानते हो। नये2 आते हैं समझते हैं हम दिन प्रति दिन सुधरते जाते हैं। श्रीमत पर चलने से ही सुधरते हैं। क्रोध पर भी पुरुषार्थ करते2 जीत पाते हैं तो बाप भी समझते हैं यह खामियों को निकालते रहते हैं। क्रोध भी बड़ा खराब है। अपने अन्दर को भी जला देती है। दूसरे को भी जलाते हैं। वह भी निकालना चाहिए। ऐसे मत समझे हम दादा से क्रोध करते हैं। नहीं। शिव बाबा के आगे आत्मा अपना क्रोध दिखाती है तो और ही सोण दण्ड पड़ता रहेगा। सोण दण्ड पड़ने2 क्या नतीजा होगा, सदगति होगी नहीं। पदभी कम, घाटा बहुत पड़ जाता। जन्म-जन्मान्तर कल्प कल्पान्तर का घाटा पड़ जाता है श्री न प न सकने से। गायनभी है सतगुरु का निन्दक ठौर न पाये। तुम प्रजापिता ब्रह्माकुमार-कुमारियां हो। यहां ब्रह्मा कुमारियां ही रह सकती हैं। कायदा ऐसा है। तो कायदों पर चलना पड़े ना। फिर आश्रम है ना। कालेज में जो पढ़ने वाले होते हैं वही रहेंगे। दूसरे कोई को रख नहीं सकते। बिमारी आदि में भी सम्भालने वालों को दवाई आदि करनी है। ऐसे नहीं कि मित्रसम्बन्धी आकर दवाई करेंगे। ~~ई~~ के मित्र सम्बन्धी आवेंगे भी तो बाहर में जाकर रहेंगे। ऐसे नहीं बच्चों के पास जाकर रहेंगे। कायदे होते हैं कलियुग में। वह तो है जिस्मानी पढ़ाई। यह रूहानी बाप रूहानी पढ़ाई पढ़ाते हैं। हर प्रकार की सम्भाल भी होती ~~है~~= रहती है। कोई बिकारी अन्दर आ न सके। बिमारी आदि में भी बिकारी मित्र सम्बन्धी आये यह तो अच्छा है नहीं। पसन्द भी हम न करें। नहीं तो अन्त काल जो मित्र सम्बन्धी आदि सिमरे .... अन्तकाल में भी याद न पड़ना चाहिए। फिर पद भी उच्च पा न सके। बाप तो पुरुषार्थ कराते हैं कोई भी याद न आये। ऐसे नहीं हम बिमार हैं ~~इसलिये~~= इसलिये आये मित्र सम्बन्धी देखने लिये। उन्हों को बुलाना यह कायदा नहीं। हंस बगुलों को बुलावे, तो समझा जाता है इनका बगुलों साथ ही संग है। वह आकर क्या करेंगे। दवाई करेंगे? वह तो होती रहती हैं। कायदे सिर चलने से ही सदगति होती है। नहीं तो कुछ अपने को नुकसान पहुंचाते हैं। बगुलों के सम्बन्ध में रहने से और ही दुर्गति हो पड़ेगी। उच्च पद भी पा न सके। परन्तु तमोप्रधान बुद्धि यह भी समझते नहीं हैं। ईश्वर राय देते हैं तो भी सुधरते नहीं। बड़ा खबरदारी से चलना चाहिए। क्योंकि यह है होलीएस्ट आफ होली स्थान। पतित ठहर न सके। जो शिव बाबा के बच्चे ही नहीं उनसे प्रीत रखना ही रांग है। मित्र सम्बन्धी बिदयाद होंगे तो मरने समय भी जरूर वह याद आवेंगे। देह-अभिमान में आने से अपने को ही नुकसान पहुंचाते हैं। सजा के निमित्त बन पड़ते हैं। श्रीमत पर न चलने से बड़ी दुर्गति हो जाती है। सर्विस लायक बन सके। कितना माथा मारे। परन्तु हो न सकेंगे। अवज्ञा की है तो पत्थर बुद्धि बन जाते हैं। ऊपर चढ़ने बदली नीचे ही गिर –

17-10-68

3

जाते। बाप तो कहते हैं बच्चों को आज्ञाकारी बनना चाहिए। नहीं तो पद भ्रष्ट हो पड़ेंगे। लौकिक बाप के पास 4-5 बच्चे होते हैं कई वही बच्चे प्रिय लगते हैं। जो आज्ञाकारी सपूत होते हैं। न आज्ञाकारी लिये तो बाप कहेंगे यह मुआ भला। दुःख ही देंगे। यह तो बेहद का बाप है। बेहद का बाप का नाराज़ होने से पद भ्रष्ट हो जायेगा। तुमको ब दोनो बाप बहुत बड़े मिले हैं। उनकी अवज्ञा करने से पद भ्रष्ट हो पड़ेंगे। अपने को नुकसान ही पहुंचावेंगे। फिर जन्म जन्मान्तर कल्प कल्पान्तर बहुत कम पद पावेंगे। पुरुषार्थ ऐसा करना है जो अन्त में एक ही शिव बाबा याद आये। बाप कहते हैं मैं जान सकता हूं हरेक क्या पुरुषार्थ करते हैं। कोई तो बहुत थोड़ा हमको याद करते हैं। बाकी अपने ही मित्र सम्बन्धियों को याद करते रहते हैं। वह इतना खुशी में नहीं रह सकते। उच्च पद पा न सकें। तुम्हारा तो रोज सतगुरु वार है। बृहस्पत के दिन कालेज में बैठते हैं। वह है जिसमानी विद्या। तुम जानते हो शिव बाबा हमारा बाप टीचर गुरु है तो उनकी डायरेक्शन पर चलना चाहिए। तब ही उच्च पद पा सकेंगे। जो पुरुषार्थी हैं उन्हों के अन्दर बहुत ही खुशी रहती है। बात मत पूछो। खुशी है तो औरों को भी खुशी कर पुरुषार्थ कराते रहते हैं। बच्चियां देखो कितनी मेहनत करती रहती हैं। दिन रात। क्योंकि यह वन्डर फुल ज्ञान है ना। बाप दादा को नाराज़ किया तो सारी कमाई ही खत्म हो जावेगी। मुफ्त घाटा पड़ जावेगा। देहाभिमान रूप बहुत घाटा डालते हैं। देह-अभिमान में आकर अन्दर में बड़ा जलते हैं। क्रोध में चलना होता है। मनुष्य को क्रोध जलाता है। काम काला बना देती है। मोह में, लोभ में जलते नहीं। क्रोध में जलते हैं। क्रोध का भूत बहुतों में है। कितना लड़ते हैं। लड़ने से ही अपना नुकसान कर देते हैं। निराकार साकार दोनो की अवज्ञा करते हैं। बाप समझते हैं यह तो कपूत है। मेहनत करेंगे तो उच्च पद पावेंगे। तो अपने कल्याण लिये सभी सम्बन्ध भूला देनी है। सिवाय एक बाप के किसको भी याद नहीं करना है। घर में रहते, सम्बन्धियों को देखते हुये शिव बाबा को याद करना है। तुम हो संगम युग पर। अभी अपने नई घर को, शान्तिधाम को याद करो। कोई भी पतित विकारी को यहां आकर रहने का निमंत्रण नहीं दिया जाता। जो ब्रह्माकुमारियां ही नहीं तो यहां रह नहीं सकते। तुम्हारी यह युनिवर्सिटी भी है तो होस्टल भी है। होस्टल में पवित्र स्टुडन्ट ही रहेंगे। कोई में क्रोध का भूत है तो अपने को ही जलाते हैं। अपना ही पद भ्रष्ट करते हैं। बाप दादा दोनो कहते हैं ऐसे कपूत अवज्ञा करने वाले तो मुआ भला। बड़ों की नाराज़गी नहीं उठानी चाहिए। यह तो बेहद के बड़े है ना। बाप शिक्षा देते हैं उसमें बच्चों का ही फायदा है। नहीं तो बहुत ही घाटा पावेंगे। बहुत पछतावेंगे। सज़ाओं का भी तुमको सा० कराया है। पिछाड़ी में बहुत सजा खानी पड़ेगी। जिन द्वारा बाप ने सा० कराया वह भी भागन्ती हो गये। श्रीमत पर न चलने कारण बुधि का ताला ऐसा लग जाता है जो भागन्ति हो जाते हैं। कुछ भी पद पा न सकें। इसलिये बच्चों को खबरदार बहुत रहना है। अटपटे चलन से मुफ्त अपने को नुकसान पहुंचाते हैं। आते हैं, पुरुषार्थ करते हैं विश्व की बादशाही लेने परन्तु माया बिल्ली उन पर मूत जाती है। जन्म लिया है कहते हैं हम यह पद पावेंगे परन्तु माया बिल्ली मूत लेती है तो पद भ्रष्ट हो जाते हैं। माया बड़ा ही जोर से वार करती है। तुम यहां आते हो राज्य लेने लिये परन्तु माया कितना हैरान करती है। गुलबकावली की कहानी है ना। बाप को तरस पड़ता है बिचारी उच्च पद पावे तो अच्छा है। मेरी निन्दा कराने वाला तो मुआ भला। सद्गुरु का निन्दक ठौर न पाये। किसकी? शिव बाबा की। ऐसी चलन न चलनी चाहिए जो बाप की निन्दा हो। इसमें अहंकार की बात नहीं। अपनी ही दुर्गति करते हैं। अच्छा मीठे २ रूहानी बच्चों को बाप दादा का याद प्यार गुडमार्निंग। रूहानी बच्चों को नमस्ते।

सूचना:- ज्ञानामृत पत्रिका बाप दादा के डायरेक्शन अनुसार अक्टूबर और नवम्बर की इकट्ठी छपेगी और नवम्बर के पहले सप्ताह में भेजी जावेगी। उसमें प्रदर्शनी अथवा म्यूजियम देखने वाले विशेष 2 लोगों की ओपीनियन छपेगी

******

(2) देहली में मिनी म्यूजियम खुला है। उनका पता लिख रहे हैं।

World Renewal Spiritual Museum,

A - 5, C. C. Colony

(Near Rana Pratap Bagh), D E L H I - 7.